Guftagoo

Chalo, Sab Milkar is Guftagoo ko Dilkash Banaye

MESSAGE FROM THE STATE LEAD- CHHATTISGARH

It is rightly said that time has wings and flies at top speed, the new year 2025 arrived and already we are at that juncture of the year where we are ready to share stories, poetry, thoughtful pieces on Adivasi culture and our work unfolding in our work areas. Yes! It is time for "Guftagoo" in her 4th avatar that will bring forth conversations of strength, change, confidence and optimism. In the current edition of Guftagoo we are focusing on Adivasi culture that has deep ecological roots and this umbilical relationship ensures protection and conservation of Mother Nature. As you navigate through the conversations chronicled you will come across stories of change and strengthening livelihoods, ensuring crucial access to quality education, celebrating womanhood and women ensuring and leading transformative change and much more...

Come join us in the ever unfolding conversations that emerge from our communities' resilience and response to an everchanging world and climate which not only humbles us as an organization, as a team but also provides the energy to keep striving for a humane and equitable world.

Krishna Srinivasan, State Lead- Chhattisgarh

Content

1. बोल रहा आदिवासी
2. सुकलाल धुर्वे ,ग्राम - बैरख "जैविक दवा निर्माण
3. बाल विकास कोर्स से मिली समझ
4. आदिवासी संस्कृति और टोटेम के आधार पर प्राकृति की संरक्षण
5. मछली पालन - जय मां सरस्वती महिला स्वयं सहायता समूह नेवराटोला
6. A Farmer's Triumph: Pardesi's Journey to Agricultural Success
7. Empowering Teachers in Sanand Block: A Transformative Teachers' Training Session
8. Empowering the Baiga Community of Petli, Banjari: A Journey Towards Education and Transformation
9. Exploring Knowledge - A Journey to Learn and Grow
10. Igniting Change: A Journey of Empowerment for Self-Help Groups
11. International Women's Day 2025 – A Celebration of Strength & Equality
12. From Struggles to Success: Joshna Ben's Journey of Empowerment Through Tailoring

MESSAGE FROM THE MANAGING TRUSTEE

I am so glad to see the Guaftagoo initiative actively engaging in discussions about the cultural aspects of tribal communities. This edition features beautiful stories that highlight their culture, beliefs, norms, and values, which are constantly evolving. The culture may transform in response to changes in the environment, yet there are individuals who serve as torchbearers, preserving certain practices despite the instability of their ecology and striving to navigate various external contradictions.
In recent times, the term "clash of cultures" has become akin to a proverbial "dialogue of the deaf." However, in this ever-changing landscape, amidst the flood of external influences, there are compelling stories that need to be told.

Gazala Paul, Founder and Executive Director

Editorial Board: Samikshya Singh, Krishna Srinivasan, Iqbal Baig

बोल रहा आदिवासी

मेरा आदिवासी होना ही काफी है मेरी पहचान के लिए,
कमजोर व अनपढ़ होना तो बस बहाना है।
मेरी माटी पर है नजर तुम्हारी,
विकास व समसरता तो बस फसाना है।
छीन लेना चाहते हैं सारी सम्पदाएं मुझसे,
जो प्रकृति ने मुझे दिया प्यार से।
मैनें सरंक्षण किया सबका,
पर अब लूटना चाहते हैं व्यापार से।
गहरी है इतिहास मेरी, अलिखित मेरा संविधान था,
था प्रकृति प्रेम का अद्भुत मिश्रण, इस जंगल की माटी भी महान था।
पर लूट लिया तुम सबने, मेरी सारी सम्पदायें,
किया प्रकृति के नियमों से खिलवाड तो आएंगी आपदायें।
मानव सभ्यता के विकास में या हर क्रांति के आगाज में
प्रकृति के संरक्षण में, हर पहला कदम मेरा था।
मैनें नदियों संग जीना सीखा, पेडों के साथ बढना सीखा,
पंक्षियों संग बोलना सीखा, पशुओं संग चलना सीखा।
मैं जंगलों में रहकर उसी के रूप में ढलने लगा,
प्रकृति के आंचल में मुस्कुरा कर पलने लगा।
पर उनकी क्रूर नजर से बच नहीं पाया,
मेरी माटी मेरे वन साथ रख न पाया।

चन्द कौड़ी के लालच में लूट गयी मेरी माटी और वन,
छोड़ अपनी मातृभुमि किया मेरा विस्थापन।
अब दर-दर भटक रहा रोजी, रोटी और मकान के लिए
मेरा आदिवासी होना ही काफी है मेरी पहचान के लिए।

- मिलन सिंह धुर्वे

सुकलाल धुर्वे ,ग्राम - बैरख "जैविक दवा निर्माण

सुकलाल धुर्वे,ग्राम बैरख, के निवासी है जो कि 45 साल से खेती कर रहा हैं. इसका मुख्य फसल धान, चना है और अपने खाने के लिए सब्जी भी लगा लेते है।
किसान कम समय में अधिक उत्पादन लेने तथा फसल में लगे बीमारी को हटाने के लिए मंहगे रासायनिक दवाओं का इस्तेमाल करते थे। इसके चलते कृषि कार्य में लागत बहुत ज्यादा होता था ।

कृषि वानिकीय किसान "सुकलाल धुर्वे " जी को समर्थ संस्था के सहयोग से ,कृषि विभाग द्वारा जैविक दवा तैयार करने की प्रक्रिया और उपयोग करने की प्रक्रिया प्रशिक्षण के माध्यम से बताया गया ।
किसान प्रशिक्षण से सिख कर ,अपने घर में 21 प्रकार के पत्तियों को कूट कर उसे उबाल दिया जाता है। उसके बाद उसमें गौ मूत्र मिला कर तैयार किया गया। किसान द्वारा अपने सब्जी और फसल में उपयोग किया गया। जिससे इसके परिणाम 45% दिखा गया।
आगामी वर्ष की योजना:-
किसान अपने घर के खेती, सब्जी ,फसल में उपयोग करेगा ,साथ ही रासायनिक दवाओं का इस्तेमाल कम कर दिया जाएगा है। जिससे इस किसान की दवाई में इस्तेमाल होने वाले पैसा का बचत हुई है। और दूसरे किसानो को जैविक दवा का उपयोग को बढ़ावा दिया जाएगा।

बाल विकास कोर्स से मिली समझ

मैं राम कुमार विश्वकर्मा हूँ, बाल विकास, विशेष ज़रूरतें और सीखना" कोर्स में भाग लेने का अनुभव मेरे लिए बेहद ज्ञानवर्धक रहा। इस कोर्स के माध्यम से मैंने बच्चों के समग्र विकास — शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक पहलुओं — को गहराई से समझा।
मैंने जाना कि बच्चों का विकास चरणबद्ध तरीके से होता है, जैसे कि सेंसरीमोटर चरण, प्री-ऑपरेशनल चरण, कांक्रीट ऑपरेशन चरण और फॉर्मल ऑपरेशन चरण। इन चरणों को समझकर यह स्पष्ट हुआ कि हर उम्र और अवस्था में बच्चों की सोचने और सीखने की क्षमता अलग-अलग होती है, जिसे हमें शिक्षा प्रदान करते समय ध्यान में रखना चाहिए।
कोर्स ने इस बात पर भी ज़ोर दिया कि बच्चों की सीखने की प्रक्रिया में परिवार, समाज और संस्कृति की अहम भूमिका होती है। जब शिक्षा इन संदर्भों को ध्यान में रखते हुए दी जाती है, तो बच्चों के लिए वह अधिक अर्थपूर्ण और प्रभावशाली बन जाती है।
बच्चे बातचीत, सहयोग और अपने आसपास के वातावरण से जुड़कर सीखते हैं। इसलिए, यदि हम उन्हें उनकी विशेष ज़रूरतों के अनुसार शिक्षण का अवसर दें, तो उनकी सीखने की क्षमता में उल्लेखनीय सुधार हो सकता है।
इसके अलावा, आंतरिक और बाह्य अभिप्रेरणा की भूमिका को भी मैंने इस कोर्स में समझा। आंतरिक अभिप्रेरणा, जो बच्चे के भीतर से आती है, उन्हें लंबे समय तक सीखने के लिए प्रेरित करती है और आत्म-प्रेरणा को विकसित करती है। वहीं, बाह्य अभिप्रेरणा जैसे पुरस्कार या प्रशंसा, बच्चों को अपने लक्ष्यों की ओर आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करती है।
मैं सामर्थ चैरिटेबल ट्रस्ट का आभार प्रकट करता हूँ, जिन्होंने मुझे यह कोर्स करने का अवसर दिया।

आदिवासी संस्कृति और टोटेम के आधार पर प्राकृति की संरक्षण

आप सभी को यह जानना जरूरी है कि आदिवासी समाज की संस्कृति न केवल भारतीय समाज की जड़ों से जुड़ी हुई है, बल्कि उसे विश्व संस्कृति की जननी भी माना जाता है। आदिवासी जीवनशैली, उनकी परंपराएं, प्रकृति के प्रति उनका दृष्टिकोण और उनकी कलात्मक अभिव्यक्तियाँ, पूरी दुनिया की सांस्कृतिक धरोहर को समृद्ध करती हैं।

प्रकृति और पर्यावरण के प्रति आदिवासी दृष्टिकोण

आदिवासी समाज में प्रकृति को एक पूजनीय तत्व माना जाता है। उनकी धार्मिक मान्यताएं, संस्कार और सामाजिक व्यवस्थाएं प्रकृति के साथ गहरे संबंध में जुड़ी होती हैं। वे जंगल, नदी, पहाड़, जीव-जंतु, पेड़-पौधे सभी को समान सम्मान देते हैं और उन्हें संरक्षित करने की जिम्मेदारी निभाते हैं। यह दृष्टिकोण आधुनिक पर्यावरणीय संरक्षण के प्रयासों के लिए भी अत्यंत प्रेरणादायक है।

टोटेम: संस्कृति और संरक्षण का प्रतीक

आदिवासी समाज में टोटेम का विशेष महत्व है। टोटेम कोई पशु, पक्षी, पेड़, जल या स्थल हो सकता है, जिसे किसी गोत्र या समुदाय विशेष से जोड़ा जाता है। यह केवल धार्मिक प्रतीक नहीं होता, बल्कि उस समुदाय की प्रकृति के साथ जुड़ी जिम्मेदारी और संरक्षण की भावना का भी प्रतीक होता है। प्रत्येक गोत्र का एक विशेष टोटेम होता है और उसके संरक्षण की जिम्मेदारी उस गोत्र के लोगों पर होती है।

टोटेम से जुड़े मूल्य:

- प्राकृतिक संसाधनों से संबंध
- धार्मिक एवं सांस्कृतिक आस्था
- पर्यावरणीय संरक्षण की भावना
- सामाजिक एकता और पहचान
- प्राकृतिक संतुलन और जिम्मेदारी

गढ़, गोत्र और टोटेम की परंपरा

आदिवासी समाज में गढ़-किला, गोत्र और टोटेम की एक विशेष परंपरा है। प्रत्येक गोत्र का संबंध एक गढ़ से होता है और उस गढ़ से संबंधित प्राकृतिक तत्वों (जैसे पशु, पेड़, पक्षी, वनस्पति आदि) को टोटेम के रूप में माना जाता है। उदाहरण के लिए:

- मरकाम, नेताम, टेकाम, आयाम, केराम आदि 18 भाईयों की गढ़ किला धमधागढ़ है। उनके टोटेम – सांड (पशु), बाघ (वन्य जीव), कछुआ (जलीय जीव), साल पेड़ और छिंदी वनस्पति हैं। इन तत्वों का संरक्षण और सम्मान इस समुदाय की जिम्मेदारी है।
- इसी तरह मरावी, कुंजाम, श्याम, पन्द्राम, ताराम, भलावी आदि 18 भाई हैं, जिनके टोटेम – नाग, सरई पेड़, नीलकंठ, चीता आदि हैं।

आदिवासी समाज में कुल लगभग 750 गोत्र हैं और प्रत्येक गोत्र को एक विशिष्ट टोटेम से जोड़ा गया है। इन टोटेमों के माध्यम से जन्म, विवाह और मृत्यु जैसे प्रमुख संस्कारों में प्रकृति के प्रति आदर प्रकट किया जाता है।

मछली पालन - जय मां सरस्वती महिला स्वयं सहायता समूह नेवराटोला

जिला कबीरधाम के, बोडला ब्लॉक, के ग्राम नेवराटोला मे जय माँ सरस्वती महिला स्वयं सहायता समूह द्वारा मछली पालन किया गया जा रहा है | इस गाँव मे मुख्यतः “ बैगा समुदाय “ निवासरत है इनका मुख्य कार्य कृषि और वनोंउत्पाद से जुड़ी हुई है |

जय माँ सरस्वती महिला स्वयं सहायता समूह जो पहले से बना हुआ था | लेकिन समूह एकता कमी के कारण ,जैसे घर के सदस्यो का सहयोग न होना और गांव के ऐसे लोग थे जो समूह के बारे में गलत धारणा बना चुके थे। उनको लगता था की एक ही सदस्य ही लाभ ले रहा है । इसी तरह कई ऐसे समस्या आए है. जिसके कारण समूह द्वारा कोई गतिविधि नहीं हो रही थी . और सभी सदस्य एक दूसरे के बात को नहीं समझ रहे थे।

समर्थ कार्यकर्ता द्वारा संपर्क कर समूह की जानकारी लिया गया कि समूह नि:सक्रिय है फिर कार्यकर्ता द्वारा बताया गया की समूह मे रह कर क्या कार्य कर सकते है | और समूह मे जुड़ कर कैसे लाभ ले सकते है समूह के सभी सदस्यों का बैठक रखा गया और बैठक मे चर्चा किया गया | की हम समूह समूह के मध्यम से आजीविका और अन्य कार्य कर सकते है | समूह के सदस्यों द्वारा समूह को आगे चालने के लिए तैयार हुए। सदस्यों द्वारा बताया गया कि गांव में एक तालब है जिसमें 10 माह तक पानी रहता तो उसमें मछली पालन कर सकते है। लेकिन मछली बीज कहा से मिलेगा।

समर्थ संस्था के सहयोग से विभाग में समन्वय बना कर मछली बीज उपलब्ध करवाया गया । तालाब में मछली के लिए खाना समूह के सदस्यो द्वारा करते थे. और जिससे मछली की वजन बढ़ जाए।

पहले साल में समूह 20,000 रुपए का मछली बेचा गया। समूह के सदस्यो को लगा कि मछली पालन करने से समूह को लाभ को रहा हैं तो समूह के सभी सदस्यों द्वारा निर्णय लिया गया कि अपने बचत की राशि से तालाब मछली बीज तालाब में डाल सकते है 2024-2025 में मछली बीज डाला गया ओर ये समूह के सदस्यो के द्वारा गांव - गांव जाकर मछली बेचा गया जिसमें समूह को 30,000 रुपए का लाभ हुआ था।

A Farmer's Triumph: Pardesi's Journey to Agricultural Success

In the small village of Bhonda, nestled in Chhattisgarh's Bodla Block, farmers like Pardesi and his wife, GulabaBhai, struggled with unpredictable weather and low agricultural yields. Their traditional farming methods provided food security for only 6-7 months, leaving them with little to no cash income. Frequent drought-like conditions and excessive monsoonal rains often resulted in crop failures, forcing many villagers to migrate in search of work.

Their turning point came through the High Impact Mega Watershed Project (HIMWSP), a collaborative initiative by the Government of Chhattisgarh, BRLF, and Axis Bank Foundation. The project, aimed at increasing small and marginal farmers' income through sustainable watershed management, introduced new agricultural techniques. Guided by facilitators from the Samerth Bodla team, Pardesi learned and adopted line sowing for paddy and tomatoes under the Systematic Rice Intensification (SRI) technique. This method ensured evenly spaced planting, efficient resource utilization, improved weed management, and higher yields.

To further strengthen their farming knowledge, Pardesi and his wife attended Production of Practices (POP) training and Arhar (pigeon pea) line sowing training conducted by Samerth in collaboration with the Agriculture Department. They were also encouraged to diversify their crops with vegetable farming, receiving handholding support to cultivate tomatoes, bitter gourd, beans, and pigeon peas.

Additionally, the couple was introduced to the Machanketi (scaffolding) technique, which utilizes locally available sticks to provide structured plant support. Under Samerth's technical guidance, they combined bitter gourd and beans in a triangular arrangement, optimizing shading, aeration, and plant health while reducing costs.

As part of HIMWSP Phase 1, MNREGA work in their village provided Pardesi additional income. He worked 45 days, earning ₹9,945, which he reinvested into his farm. Moreover, two producer groups (PGs) were formed in Bhonda, each with 119 farmers, fostering collective learning and better market access. To support sustainable farming, the village received 200 fruit saplings, including mango, lemon, and fig, promoting agroforestry practices.

The impact was transformative. Pardesi's crop yields increased significantly, reducing input costs and improving quality. His annual income surged from ₹84,000 in 2021 to ₹1,19,000 in 2023. His profit from paddy cultivation alone reached ₹62,800, while tomato farming brought in ₹14,600. Inspired by his success, over 35 farmers in the village adopted line sowing, and his wife, a member of the Radha Rani SHG, motivated others to embrace modern farming techniques.

Empowering Teachers in Sanand Block: A Transformative Teachers' Training Session

Samerth Charitable Trust's Urban Program, in collaboration with Ahmedabad Jilla Panchayat and the Sanand Block BRC Education Department, conducted a transformative training session for government teachers of Grades 3 to 5. The session was warmly welcomed by the BRC and brought together 96 dedicated teachers from Sanand Block, aiming to enhance pedagogical skills and improve student learning outcomes.

The training focused on 13 key pedagogical methods, with a special session led by Samerth's education expert on Howard Gardner's Theory of Multiple Intelligences and effective pedagogy. Teachers engaged in hands-on activities like Project-Based Learning (PBL) and Activity-Based Learning (ABL), fostering innovation and practical insights. Creative performances like Abhinay Geets added energy and fun to the training, while teachers also presented their projects, sharing new ideas.

The session emphasized language pedagogy, group work, and effective teaching strategies, inspiring teachers to enrich their classrooms and positively impact student learning.

Empowering the Baiga Community of Petli, Banjari: A Journey Towards Education and Transformation

The Baiga community of Bodla block in Chhattisgarh, recognized as a Particularly Vulnerable Tribal Group (PVTG), has a deep-rooted cultural and ecological bond with nature. Traditionally forest-dependent, they rely on agriculture, fishing, and animal rearing for survival. However, they continue to face challenges like limited healthcare, education, and livelihood options, compounded by seasonal migration and infrastructural gaps.

To address these issues, Samerth Charitable Trust, in collaboration with SCERT Chhattisgarh and with support from the American India Foundation, has been implementing the Learning and Migration Program (LAMP) across five districts—Mahasamund, Sakti, Sarangarh, Balodabazar, and Kabirdham. In Kabirdham's Bodla block, three Learning Resource Centres (LRCs) have been established at Shitalpani, Siwinikala, and Palak. These centers are equipped with handmade Teaching Learning Materials (TLMs), FLN kits, STEM tools, and library books to improve foundational literacy and joyful learning.

In one such hamlet—Banjari (Petli), located 40 km from Kabirdham amidst the Maikal hills—25 Baiga families had not sent any child to school in the last six years due to distance and a lack of awareness. The local government school, situated 3 km away, remained unutilized by the community.

In June 2024, Samerth's team initiated an awareness campaign in the village, sharing information about government schemes for migrant families and emphasizing the long-term benefits of education. Through multiple community meetings involving teachers and local stakeholders, they helped families understand how education could enable long-term social and economic upliftment.

Gradually, the mindset shifted. Encouraged by these discussions, 12 children from the village were enrolled in the nearby government school. Samerth's Education Facilitator began using play-based, joyful learning methods and handmade materials to support foundational literacy and numeracy for children who were all first-generation learners.

Initially, the children were accompanied to school by Samerth team members to help them settle into the new routine. With time, they began walking the 2 km independently, even helping one another along the way. Their regular attendance and growing enthusiasm inspired more families to send their children to school.

What started as a small effort quickly became a community-led movement. Children began spending time studying together after school, supported by a local youth mentor who voluntarily guides their evening study sessions. This mentorship further strengthened their learning and confidence.

Today, Banjari (Petli) is a shining example of what collaborative efforts—between the government, civil society organizations, teachers, and the community—can achieve. The transformation of a village where no child went to school into one where education is now a source of hope and empowerment highlights the power of sustained engagement, empathy, and facilitation in driving long-term, meaningful change for tribal communities.

Exploring Knowledge - A Journey to Learn and Grow

On 8th March 2025, Samerth Charitable Trust, supported by PPG Asian Paints, organized an educational field trip to Science City, Ahmedabad, for 190 children and 10 teachers from the Sari, Matoda, Palwada, Moraiya, and Kasindra Community Centres. The trip provided an engaging opportunity for students to explore various scientific concepts in an interactive environment.

At the 4 Space Hall, children experienced science-related equipment, while at Equity Park, they learned about different species of fish. In the Robotic Park, they witnessed the working of modern robots, and at the Natural Park, they explored various plants, flowers, and herbs. This hands-on experience allowed children to conduct experiments, understand the functioning of robots, and learn the importance of herbs in human life. The trip, accompanied by a delicious lunch, further enhanced the overall experience, leaving the children with a sense of curiosity and newfound knowledge.

Igniting Change: A Journey of Empowerment for Self-Help Groups

On 5th and 15th March 2025, Samerth Charitable Trust, supported by PPG Asian Paints, organized an inspiring exposure visit for 119 women from the SHG groups in Sari, Moraiya, Matoda, Palwada and Kasindra (Sanand Block). The visit aimed to empower these women through new experiences and learning opportunities.

The group explored cultural landmarks, enjoyed shopping in local markets, and savored a wholesome community meal. At Akshardham, they immersed themselves in the region's rich heritage and interacted with educational exhibitions. The visit provided valuable learning experiences, allowing the women to explore new environments and gain fresh perspectives.

This exposure visit broadened their horizons, enhanced their confidence, and strengthened community bonds. Many women expressed their pride and gratitude, highlighting how the opportunity helped them feel more independent and inspired to continue their journey of self-growth and empowerment.

International Women's Day 2025 – A Celebration of Strength & Equality

On 8th March 2025, Samerth Charitable Trust, supported by PPG Asian Paints, organized a vibrant International Women's Day celebration with 352 inspiring women from Palwada, Sari, Matoda, Moraiya, Tajpur, Visalpur, and Kasindra villages. The event brought together diverse stakeholders, including special participation from PPG Asian Paints team members – Suresh Sir, Sanjeet Sir, and their team. The event was also graced by the Palwada Primary School Principal, Sari Gram Panchayat Sarpanch, and Samerth's dedicated team.

The celebration focused on the theme "Accelerate Action: For ALL Women and Girls: Rights. Equality. Empowerment," and highlighted SDG 5, emphasizing gender equality, eliminating discrimination, and ensuring equal opportunities. Women shared their stories of achievement, challenges, and aspirations, inspiring collective action. The event also honored women's contributions across social, economic, cultural, and political fields while advocating for gender equality and women's rights.

This empowering event served as a powerful reminder of the strength and resilience of women, driving change toward a more inclusive future.

From Struggles to Success: Joshna Ben's Journey of Empowerment Through Tailoring

Joshna Ben Rathod, a 40-year-old seamstress from Palwada Wankar Vas, faced financial struggles with her husband, Jigneshbhai, a farmer earning just ₹2000/- a month. Despite not finishing her schooling, Joshna Ben was determined to improve her family's life. She joined Samarth Sanstha's skill center in Palwada to learn advanced sewing and cutting techniques, including making blouses with patterns and dresses.

After two months of training, Joshna Ben began earning ₹2000-2200/- a month from her tailoring work. This income helped support her children's education and improve her family's well-being. She is grateful for the opportunity to learn and continues to work hard to contribute more at home.

Joshna Ben's story is a testament to the power of skill development and determination. It shows how learning a new skill can change not only an individual's life but also the lives of their loved ones. Her story is one of triumph, resilience, and a commitment to bettering her family's future, no matter the obstacles.

samerthtrust1992@gmail.com
linkedin.com/samerthtrust
www.samerth.org
samerthcharitabletrust
@SamerthTrust
info@samerth.org

For Private Circulation Only